दक्षिणी संगीत दोनों में है।

ग्राम, मूर्च्छना तथा जाति गायन

ग्राम—प्राचीन संगीत में प्रचलित ग्राम को आधुनिक भारतीय संगीत का सप्तक और पाश्चात्य संगीत का "स्केल" कह सकते हैं। डॉ0 श्रीधर पराजंपेजी के मतानुसार, "सात स्वरों की मूलभूत व्यवस्था का नाम ग्राम है। अर्थात् सात स्वरों का समूह ग्राम है। प्राचीन संगीत-विद्वानों के मत से ग्राम का अर्थ स्वरों का वह समुदाय जिनमें 22 श्रुतियों के अन्तर्गत सात शुद्ध स्वरों का सम्वादी भाव से व्यवस्थित रहना। आचार्य भरत ने नाट्यशास्त्र में लिखा है—"लोके मानवानां वसतिर्ग्राम उच्यते" तथा "इहापि स्वर ण्डलवसतिर्ग्रामः" अर्थात् जिस प्रकार एक ग्राम या गाँव में विभिन्न प्रकार के लोग रहते हैं ठीक उसी प्रकार त स्वर परस्पर सम्वादित भाव से एक स्थान में रहने के कारण, उसे ग्राम कहा जाता है।

7वीं शती के मतंगमुनि के अनुसार "ग्राम, स्वर और श्रुतियों का समूह है।" डॉ0 मुकुन्द लाट के सार "ग्राम स्वरों के दो groupings या समूह हैं जिसमें 22 श्रुतियों का स्वरूप व्यवस्थित रहता है। ्यशास्त्र' के टीकाकार आचार्य अभिनव गुप्त के मतानुसार—ग्राम स्वर और श्रुतियों का वह समूह या (group) है जिसमें मूर्च्छना, वर्ण, अलंकार आदि का स्वरूप बनता है। प्राचीन ग्राम ही आगे चलकर त में सप्तक के रूप में प्रचलित हुआ।

महर्षि भरत ने दो ग्रामों का उल्लेख किया है। 13वीं शताब्दी के पंडित शारंगदेव ने तीन ग्रामों का ख किया है—षडजग्राम, मध्यमग्राम, गन्धार ग्राम। लेकिन प्राचीन संगीत (गान्धर्व) के स्वर-श्रुति, मूर्च्छना, जातिगायन आदि में केवल षडज और मध्यम ग्राम का प्रयोग किया जाता था। उसका कारण, भरत-संगीत में 'मध्यम स्वर' को 'अविनाशी स्वर' कहा गया, इसलिए 'मध्यम ग्राम' निश्चित षडज ग्राम' की मान्यता इसलिए थी, क्योंकि मध्यम स्वर का षडज स्वर से सम्वादित्व सम्बन्ध है। षडज ग्राम भी आवश्यक था। षडज और मध्यम ग्रामों में स्वर व 22 श्रुतियों की मेलोडिक odic) व्यवस्था काल्पनिक नहीं थी, अपितु तत्कालीन प्रचलित वीणा जैसे तन्त्रवाद्यों की सहायता न' निकाले गये थे। उस समय वीणा एक ऐसा उपकरण था जिस पर भारतीय संगीत के सभी क प्रयोग करके ही सुनिश्चित निष्कर्ष निकाले जाते थे। अतः भारतीय संगीत के विकास मे वीणा त्रवाद्य की अहम भूमिका रही है। दोनों ग्रामों के स्वरों में सम्वाद भाव है अर्थात् नौ और तेरह श्रुतियों ोडिक (melodic) अन्तराल है। इसीलिए भरत-संगीत में दो ग्रामों (षडज व मध्यम) के द्वारा में प्रचलित जाति गायन का विकास किया गया

षडज और मध्यम ग्रामिक स्वरों का अन्तर यह था—षडज ग्राम में षडज स्वर से स्वरावलि का किया जाता है, जैसे—स, रे, ग, म, प, ध, नी। षडज ग्राम में प्रत्येक स्वर के लिए श्रुतियों का 3+2+4+4+3+2 है। इस ग्राम में षडज स्वर के मध्यम व पंचम दो सम्वादी स्वर हैं। जिन्हें बाद